एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

किसान मित्र कीटों का संरक्षण

(*रवि कुमावत[1], नीतेश कुमार तंवर[1], सरला कुमावत[2] एवं गोवर्धन प्रजापत[1])
[1]महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर
[2]जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश
* ravikumawat211@gmail.com

प्रकृति में कि हर स्थान पर कीट पाए जाते हैं। सभी कीट फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले दुश्मन कीट नहीं होते है इनमें से कुछ लाभदायक होते हैं तो कुछ नुकसान पहुंचाने वाले होते हैं। कुछ कीट ऐसे भी होते हैं जो फसल को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों को नष्ट कर देते हैं अतः कीट नियंत्रण केवल रसायनों से ही नहीं होता बल्कि जीवो जीवश्य भोजनम के सिद्धांत पर प्रकृति भी कीटों का नियंत्रण करती है इन लाभकारी कीटों को हम मित्र कीट के नाम से जानते हैं। इन दोनों तरह के कीटों का प्रकृति में एक संतुलन सा रहता है जो कि आवश्यक होता है। जेसे इनमें से कुछ लेडीबर्ड बीटल वास्प क्राइसोपा बग मेंटिस रोवर मक्खी ड्रैगन मक्खी विभिन्न प्रकार की मकड़िया आदि है इनके अतिरिक्त इनकी संख्या को मछलियां मेंढक छिपकली सांप कोवे मैना व कठ फोड़वा आदि नियंत्रित करने में सहायक होते हैं लेडीबर्ड बीटल परभक्षी कीटों में लेडीबर्ड बीटल प्रमुख है उन की विभिन्न प्रजातियां चेपा तेला स्केल मिलीबग आदि कीटों के नियंत्रण में प्रमुख योगदान देती है। इनकी वयस्क अवस्था प्रतिदिन 50 मोयला खा जाती है। मेंटिस की संख्या हालांकि कम होती है लेकिन यह कई प्रकार के कीड़ों को खाती है लेस विग, एफिड एवं कोमल शरीर वाले कीड़ों का भक्षण करते हैं तथा 1 दिन में करीब 160 कीटों को खा जाता है। क्रायसोपा हरे पंख वाला कीट होता है। यह मोयला सफेद मक्खियों चूर्णवत छोटे कीड़ों और अंडों तथा कपास के बीज के गोल के कीड़ों की शुरुआती अवस्था की सुंडी यो लटो को खाकर जिंदा रहती है।

परंतु कीटनाशक रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग से प्रकृति में पाए जाने वाले लाभदायक मित्र कीटों एवं नुकसान पहुंचाने वाले कीटों का अनुपात का संतुलन बिगड़ जाता है एवं कीटनाशक रसायनों के लगातार अधिक उपयोग से हानिकारक कीटों में प्रतिरोधक क्षमता पैदा हो जाती है एवं लाभदायक कीट जल्दी नष्ट हो जाते हैं। अतः किसानों को कीट नियंत्रण हेतु समन्वित कीट प्रबंधन तकनीक का प्रयोग करना चाहिए। जिससे यांत्रिक भौतिक सस्य या जैविक नियंत्रण विधि प्रमुख कीटों का रसायनिक विधि से नियंत्रण आर्थिक हानि स्तर से ऊपर होने पर एवं केवल अंतिम हथियार के रूप में ही काम में लेना चाहिए।

जैविक खेती को सफल बनाने के लिए इन मित्र कीटो पक्षियों आदि को पहचान कर इनका संरक्षण करना चाहिए। यदि फसल में दो कीट व एक मित्र कीट के अनुपात में उपस्थित है तो किसी प्रकार के कीटनाशक का उपयोग करना जरूरी नहीं है जिससे मृदा की उर्वरा शक्ति बनी रहेगी एवं अधिक मात्रा में जैविक उत्पाद प्राप्त होंगे जिससे किसान कम लागत में स्वास्थ्य वर्धक अधिक उत्पाद और अधिक मुनाफा प्राप्त करेगा।